नारी उत्थान में पंडित ईश्वरचन्द्र विद्यासागर (1820 ई. – 1891 ई.) का योगदान

पीएच.डी. उपाधि हेतु समर्पित प्रस्तावित शोध–प्रबंध की रूपरेखा

इतिहास विभाग

(समाज विकास संकाय)

राँची विश्वविद्यालय, राँची

शोध निदेशक :

डॉ प्रकाश कुमार झा,

एसो. प्रोफेसर

इतिहास विभाग,

राँचीविश्वविद्यालय, राँची

शोधार्थी

मधु कुमारी गुप्ता

यू. जी. सी. नेट

मो. न. – 7350269210

<u>प्रस्तावित शोध प्रंबध की रूपरेखा</u>

नारी उत्थान में पंडित ईश्वरचन्द्र विद्यासागर (1820 ई. – 1891 ई.) का योगदान

विषय वस्तु का आकलन (State of the art) :-

ईश्वरचन्द्र विद्यासागर भारत के पुर्नजागरण आंदोलन के महत्वपूर्ण स्तम्भों में से एक थे। उन्होने अपना सम्पूर्ण जीवन सामाजिक तथा शैक्षणिक सुधार आन्दोलनों में समर्पित कर दिया। वह एक प्रसिद्व दार्शनिक, शिक्षाविद, समाज सुधारक, लेखक अनुवादक थे।

ईश्वरचन्द्र विद्यासागर भारतीय पुर्नजागरण के प्रथम व्यक्ति थे, जिन्होने स्त्री शिक्षा की ओर भरपूर ध्यान दिया था। वह समाज में फैली कुरीतियों के प्रबल विरोधी थे। उन्होने विधवा पुनर्विवाह एक्ट अदालत द्वारा पास करवाया तथा बहुविवाह के खिलाफ याचिका दायर की, जिसमें उनको अशंतः सफलता भी मिली। वे मानते थे कि समाज में फैली कुरीतियाँ ही स्त्रियों के दयनीय स्थिति के लिए जिम्मेदार है। उनका मानवीय दृष्टिकोण उनकी रचनाओं जीवन चरित् (1849) शकुन्तला (1854), महाभारत, सितार वनवास (1860), रत्नपरीक्षा (1886) इत्यादि से प्रतिबिम्बित होता है।

प्रस्तावित शोध के विषय पर मिलते जुलते शोध प्रबंध तथा पुस्तकें उपलब्ध है। उदाहरण के लिए *स्टडी इन दी बंगाल रेनेसान्स* पुस्तक में ईश्वरचन्द्र विद्यासागर पर नौ पन्नों का विनय धोष (1958) का आलेख है। जिसमें पंडित ईश्वरचन्द्र विद्यासागर की जीवन तथा उनके द्वारा किए गए कार्यो का उल्लेख है। *सोशल हिस्ट्री ऑफ मॉडर्न इंडिया*

पुस्तक वी. ए. नरैन (1972) द्वारा लिखी गई है। इस पुस्तक में ईश्वरचन्द्र विद्यासागर के बारे में दस पन्नों का आलेख है, जिसमें विधवा पुनर्विवाह आंदोलन में उनके द्वारा किए गए कार्यो तथा सफलताओं का विवरण प्रस्तुत है। *थिनकर ऑफ दी इंडियन रेनेसान्स* पुस्तक में गोपाल हलदर (1982) द्वारा लिखा गया सत्रह पन्नों का आलेख है जिसमें उनकी जीवनी शैक्षणिक कार्यो तथा समाज सुधार में उनके द्वारा किए गए प्रयासों का संक्षिप्त विवरण है। के. के. दत्त (1972) की पुस्तक *सोसियों कल्चरल बैकग्राउण्ड ऑफ मार्डन इंडिया* में विधवा पुनर्विवाह में विद्यासागर के द्वारा किए गए कार्यो का उल्लेख है। *हिस्ट्री ऑफ मॉर्डन इण्डिया* जो कि ब्राह्मण सिंह तथा एच..सी. शर्मा द्वारा (2008) सम्पादित है, जिसमें पंडित ईश्वरचन्द्र विद्यासागर के द्वारा शिक्षा तथा समाज सुधार के क्षेत्र में दिए गए योगदान का संक्षिप्त विवरण है। *नाइनटिन्थ सेन्चुरी बंगाल एस्पेक्ट्स ऑफ सोशल हिस्ट्री* जो कि प्रदीप सिन्हा (1965) द्वारा लिखित पुस्तक है, जिसमें पंडित ईश्वरचन्द्र विद्यासागर द्वारा समाज सुधार तथा विधवा पुनर्विवाह आन्दोलन में उनके द्वारा किए गए प्रयासों का एक संक्षिप्त आलेख है। कैलाश खन्ना (2019) की पुस्तक *आधुनिक भारत का सामाजिक इतिहास* में इन्होने ईश्वरचन्द्र विद्यासागर द्वारा चलाया गया विधवा पुनर्विवाह आन्दोलन का विवरण दिया गया है। *उन्नीसवीं सदी में भारतीय धार्मिक तथा सामाजिक जागरण* पुस्तक जो इतिहासकार सीताराम शर्मा द्वारा (1977) लिखित है, जिसमें उन्होनें समाज सुधार आन्दोलन में उनके द्वारा किए गए योगदान का संक्षिप्त विवरण है। योगेन्द्र सिंह की पुस्तक सोशल स्ट्रेटिफ़िकेश्न् एण्ड चेन्ज इन इंडिया में शिक्षा के क्षेत्र में पंडित ईश्वरचन्द्र विद्यासागर के कार्यो का उल्लेख है।

उन सभी पुस्तकों में पंडित ईश्वरचन्द्र विद्यासागर की जीवन से संबंधित घटनाओं तथा कार्यो का उल्लेख किया गया है लेकिन नारी उत्थान में उनके योगदानों का विस्तृत

विवरण का अभाव है। प्रस्तावित शोध इस विषय पर एक व्यापक कार्य करने की योजना है।

अनुसंधान का विषय:-

19वीं सदी की नारियों की सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक तथा शैक्षणिक स्थिति का विस्तारपूर्वक विवरण उपलब्ध नहीं है, और जो जानकारियां उपलब्ध है वो अपर्याप्त है। तत्कालिन समाज में उनकी दयनीय स्थिति का उल्लेख कई विद्वानों ने अपने पुस्तकों में की है परन्तु वह पूर्ण रूप से विस्तृत व्याख्या नहीं है। विधवा पुनर्विवाह अधिनियम एंव समाज में इसकी स्वीकार्यता के लिए उन्होने व्यापक कार्य किये। नारी शिक्षा के विकास के क्षेत्र में भी ईश्वरचन्द्र विद्यासागर का योगदान महत्वपूर्ण रहा था। जामताड़ा जैसे आदिवासी बहुल क्षेत्र में नारी शिक्षा एंव स्वास्थ्य के लिए उन्होने सराहनीय पहल किए। पंडित ईश्वरचन्द्र विद्यासागर ने अपने सम्पूर्ण जीवन में नारियों की स्थिति में सुधार के लिए जो कार्य किए है उनका विस्तृत विवरण उपलब्ध नही है, अतः नारियों के उत्थान में पंडित ईश्वरचन्द्र विद्यासागर के योगदान के विभिन्न आयामों का समग्र मूल्यांकन एक स्थान पर नहीं हो सका है। प्रस्तावित शोध में तत्कालीन नारियों की स्थिति तथा उनके उत्थान में विद्यासागर की भूमिका का गहनता से अध्ययन किया जाएगा।

अतः नारी उत्थान में पंडित ईश्वरचन्द्र विद्यासागर का शैक्षणिक, सामाजिक, राजनीतिक तथा धार्मिक क्षेत्रों में योगदान इस अनुसंधान के विषय होगें।

अन्वेषण का उद्देष्य एवं प्रेरणा (Objective of the investigation and motivation):-

1. नारी की विभिन्न समस्याएँ आज भी जारी हैं। इन समस्याओं को समग्र रूप में समझने एवं उनके निदान हेतु हमें अतीत के भारत की नारियों के बारे में जानना होगा। ईश्वरचन्द्र विद्यासागर ने नारियों की महत्वपूर्ण समस्याओं को साधने का जो प्रयास किया वे हमें आज भी प्रेरणा देती है।
2. प्रस्तावित शोध का उद्देश्य यह है कि नारी की विभिन्न समस्याओं, यथा अशिक्षा, बेरोजगारी, वैधव्य, संपत्तिहीनता आदि के निदान के लिए ईश्वरचन्द्र विद्यासागर के द्वारा किए गए कार्यो से दिशा निर्देश प्राप्त किया जाए।
3. 19वीं सदी के भारत की नारियों की स्थिति पर विस्तार से प्रकाश डालना।
4. नारी उत्थान में ईश्वरचन्द्र विद्यासागर द्वारा आदिवासी महिलाओं के लिए किए गए कार्यो का मूल्याकंन।
5. इस शोध के माध्यम से नारी उत्थान में ईश्वरचन्द्र विद्यासागर के योगदान के कुछ अनछुए तथ्यों को उपलब्ध करना।
6. नारी उत्थान में ईश्वरचन्द्र विद्यासागर के योगदान की महत्ता को उजागर करना।

परिकल्पना (Hypothesis)

1 19वीं सदी के हिन्दू समाज में विधवा महिलाओं के उद्धार में उनका योगदान क्रांतिकारी था।

2 ईश्वरचन्द्र विद्यासागर विधि निर्माण के द्वारा नारियों की स्थिति में सुधार करना चाहते थे।

3 बंगाल प्रेसीडेन्सी में ईश्वरचन्द्र विद्यासागर के शैक्षणिक योगदान से नारी शिक्षा के स्तर में सुधार हुआ।

4 झारखण्ड के अनुसूचित जनजाति की महिलाओं के शिक्षा में सुधार में उनकी भूमिका अहम् रही है।

शोध प्रारूप (Research Design) :

सम्भावित अध्याय

: भूमिका

1. प्रथम अध्याय : ऐतिहासिक पृष्ठभूमि।
2. द्वितीय अध्याय : तत्कालीन समाज का नारियों के प्रति दृष्टिकोण
3. तृतीय अध्याय : विधवा पुनर्विवाह एक्ट 15,1856 में ईश्वरचन्द्र विद्यासागर की भूमिका
4. चतुर्थ अध्याय : नारी शिक्षा के क्षेत्र में ईश्वरचन्द्र विद्यासागर का योगदान।
5. पंचम अध्याय : अनुसूचित जनजाति महिलाओं के उत्थान में ईश्वरचन्द्र

विद्यासागर का योगदान।

: निष्कर्ष

: संदर्भ सूची

शोध विधि एवं डाटा संकलन हेतु उपकरण एवं तकनीक (Research methodology of tools to be used in the collection of data) :–

प्रस्तावित शोध प्रबन्ध को पूरा करने में ऐतिहासिक शोध विधि का उपयोग किया जाएगा। इसमें प्राथमिक तथा द्वितीय स्त्रोतों के संग्रह हेतु आवश्यकतानुसार गजेटियर, पत्र–पत्रिकाएं संबंधित लेख, पुस्तक एंव इंटरनेट के माध्यम से सहायता ली जाएगी। उसके साथ पुर्व के लेखकों द्वारा किये गए कार्यो का तुलनात्मक अध्ययन किया जाएगा एंव विभिन्न अभिलेखागार, संग्रहालयों एंव पुस्तकालयों से उपलब्ध सामग्री को एकत्रित कर विश्लेषणात्मक अध्ययन किया जाएगा।

शोध का महत्त्व (Significance of the research) :–

प्रस्तावित शोध के माध्यम से नारी उत्थान में पंडित ईश्वरचन्द्र विद्यासागर के द्वारा किए गए कार्यो तथा योगदानों पर प्रकाश डालना है जिस पर अभी तक शोध कार्य नहीं हुआ है। क्योंकि नारी की उन्नति में उनके द्वारा किए गए कार्यो का विस्तारपूर्वक विवरण गौण है। अतः नारी उत्थान में उनके किए गए योगदान का मुल्यांकन ही शोध प्रबन्ध के महत्व को इंगित करेगा।

वर्तमान समय में शोध कार्य की प्रासंगिकता एवंसमाज की आवश्यकता (It’s relevance the present day problem and need of society) :–

पंडित ईश्वरचन्द्र विद्यासागर से सम्बन्धित कुछ पुस्तकें देखने को अवश्य मिलती है। परन्तु उसमें नारी उत्थान में पंडित ईश्वरचन्द्र विद्यासागर का योगदान कितना था तथा उनकी क्या भूमिका थी, इसका विस्तार रूप से विवरण नहीं है।

अतः उपलब्ध पुस्तकों तथा सामग्री के माध्यम से नारी की उन्नति में पंडित ईश्वरचन्द्र विद्यासागर के योगदान की सही जानकारी प्रस्तुत करने का प्रयास प्रस्तावित शोध कार्य के माध्यम से किया जाएगा। जो समाज के हर वर्ग के लिए ज्ञानवर्धक, प्रेरणास्त्रोत और मार्गदर्शक का कार्य करेगा।

समसामयिक ज्ञान में योगदान (Contribution to the existing knowledge) –

नारी उत्थान में ईश्वरचन्द्र विद्यासागर के योगदान का विस्तारपूर्वक विवरण उपलब्ध नहीं है। नारी की उन्नति में उनका विषेष योगदान रहा है। अतः इस विषय पर शोध कार्य किए जाने की अपेक्षा है। इस शोध के माध्यम से नारी उत्थान में पंडित ईश्वरचन्द्र विद्यासागर का क्या तथा कितना योगदान रहा है इसकी जानकारी प्राप्त हो सकेगी।

भविष्य के कार्य (Future work):–

हमारा शोध भविष्य में आने वाले विधार्थी के लिए उनके शोध कार्य में सहायक होगा। इससे उनके बारे में तथा योगदान जो धुमिल हो रही है तो पुनर्जीवित होगी।

संदर्भ सूची (References)

घोष विनय – स्टडी इन दी बंगाल रेनैसान्स, दी नेशनल काउंसिल ऑफ एजुकेशन, बंगाल, 1958

नरैन वी. ए. – सोशल हिस्ट्री ऑफ मॉडर्न रेनेसोन्स विली इस्टर्न लिमिटेड न्यु दिल्ली 1982

हलदर गाोपाल – थिनकर ऑफ दी इंडियन रेनेसान्स विली इस्टर्न न्यु दिल्ली 1982

दत्त के. के. – सोसियो कल्चरल बैकग्राउंड ऑफ मॉडर्न इण्डिया, मिनाक्षी प्रकाशन, दिल्ली, 1972

सिंह ब्राह्मण शर्मा एच. सी. – हिस्ट्री ऑफ मॉडर्न इण्डिया ओमेगा पब्लिकेशन न्यु दिल्ली, 2008

सिन्हा प्रदीप – नाइनटिन्थ सेन्चुरी बंगाल एस्पेक्टस ऑफ सोशल हिस्ट्री, फर्मा के. एल. मुखोपाध्याय कलकत्ता, 1965

खन्ना कैलाश – आधुनिक भारत का सामाजिक इतिहास, अर्जुन पब्लिषींग हाउस, 2019

शर्मा सीताराम – उन्नीसवीं सदी में भारतीय धार्मिक तथा सामाजिक जागरण, हिन्दी ग्रंथ अकादमी, एम. पी.,1977

सिंह योगेन्द्र – सोशल स्टेट्रीफिकेशन एण्ड चेन्ज इन इण्डिया मनोहर पब्लिकेषन,1980

बोस प्रभाव नाथ – ए हिस्ट्री ऑफ हिन्दु सिविलाइजेशन डुरिंग

ब्रिटिष रूल, एसियन पब्लिकेशन सर्विरोज, न्यु दिल्ली, 1978

देब विकास रंजन एस. – ईश्वरचन्द्र विद्यासागर ओन एजुकेशन एच. आर. आर. इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च, 2020

बनर्जी अनिर्बन – विद्यासागर एण्ड एजुकेशन ऑफ वुमेन इन नाइनटिन्थ सेन्चुरी बंगाल एण्ड इटस् कन्टेम्प्ररी रिलेवेन्स, 2021

बाला बाबुलाल – कोन्ट्रिब्युशन ऑफ पण्डित ईश्वरचन्द्र विद्यासागर (1820–1891) एज ए मसीहा ऑफ वुमेन इमेनशिपेशन इन नाअनटिन्थ सेन्चुरी एन्सेमबल ए वाय लिगुअल पीअर रिब्यूड एकादमिक जर्नल, 2019

महतो उज्जल, मुर्मु दीलिप कुमार – वर्सटाइल विद्यासागरः सुपरिअर स्कॉलर, मार्डन फिलोसॉफर, रिअल एजुकेशनिस्ट एण्ड रिब्युज जर्नल ऑफ एजुकेशनल स्टडीज, 2021